United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

21 वी शताब्दी में चाणक्यनीति की प्रासंगिकता : शिक्षा के सन्दर्भ में

डॉ के नीरजा
एस के आर सरकारी महिला महाविद्यालय,राजमहेंद्रवरम।

भारतीय ज्ञान परंपरा में आचार्य चाणक्य का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे मौर्यकाल के महान विद्वान तथा तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य थे। उन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य को शिक्षित कर एक महान सम्राट बनाया। वे महान विचारक, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री तथा शिक्षाविद थे। उनकी कृति 'चाणक्यनीति' जीवन के विविध क्षेत्रों- राजनीति, समाज, नैतिकता, अर्थव्यवस्था और शिक्षा पर व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति में शिक्षा को जीवन का आधार माना गया है। प्राचीन भारत में शिक्षा केवल जीविका प्राप्ति का साधन नहीं , बल्कि जीवन को श्रेष्ठ बनाने का माध्यम थी। आचार्य चाणक्य ने शिक्षा को व्यक्ति और राष्ट्र निर्माण का प्रमुख साधन माना है।

21 वी शताब्दी ज्ञान, तकनीक और वैश्वीकरण का युग है, जहाँ शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गयी है। तकनिकी प्रगति के बावजूद शिक्षा अनेक चुनौतियों से जूझ रही है - जैसे नैतिकमूल्यों का ह्रास, अनुशाशन की कमी, रोजगार संबंधी समस्याएँ और व्यक्तित्व विकास की कमी। ऐसे समय में चाणक्यनीति के विचार शिक्षा को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। इस सन्दर्भ में चाणक्य के शिक्षा सम्बन्धी विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। यह शोध पत्र आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में चाणक्यनीति की उपयोगिता का विश्लेषण करता है।

चाणक्य के अनुसार शिक्षा के महत्त्व :

मानव जीवन में विद्या के महत्त्व के बारेमें बताते हुए वे कहते हैं कि मनुष्य की सच्ची संपत्ति धन नहीं, बल्कि विद्या है। जो व्यक्ति ज्ञान से संपन्न है, वही वास्तव में समृद्ध है।

धनहीनो न हीनश्च धनिकः सः सुनिश्चयः |
विद्यारत्नेन हीनो यः सः हीनः सर्ववस्तुषु || [1]

आज के समय में यह श्लोक और भी अधिक प्रासंगिक है। आधुनिक समाज में सफलता का मूल आधार शिक्षा और कौशल है। धन कमाया जा सकता है, परंतु ज्ञान अर्जित करने के लिए निरंतर प्रयास और साधना की आवश्यकता होती है।

चाणक्य का मानना है कि मनुष्य की सच्ची शोभा उसके ज्ञान और शिक्षा से होती है, न कि केवल बाहरी सौंदर्य या कुलीनता से।

रूप-यौवन-सम्पन्नाः विशालकुलसम्भवाः |
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः || [2]

कवि कहना चाहता है कि **सच्ची शोभा और सम्मान विद्या से होते हैं**। केवल सौन्दर्य, युवावस्था या उच्च कुल पर्याप्त नहीं; विद्या ही मनुष्य को वास्तव में सम्माननीय बनाती है।
इस श्लोक का संदेश आज भी उतना ही सत्य है कि **मनुष्य की सच्ची शोभा और सफलता का आधार विद्या ही है, न कि केवल रूप, यौवन या कुल।**

विद्वान व्यक्ति संसार में प्रशंसा पाता है और हर स्थान पर उसका सम्मान होता है। विद्या के माध्यम से मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर सकता है, इसलिए विद्या हर जगह पूजनीय है।

विद्वान् प्रशस्यते लोके विद्वान सर्वत्र पूज्यते |
विद्यया लभते सर्वं विद्या सर्वत्र पूज्यते || [3]

यह श्लोक आज भी सिखाता है कि **विद्या ही मनुष्य को वास्तविक सम्मान और सफलता प्रदान करती है।**

विद्या जीवन में हर परिस्थिति में सहायक होती है। परदेश में विद्या ही मनुष्य क सच्ची सहारा बनती है। धन नष्ट हो सकता है, पर विद्या सुरक्षित रहती है। शिक्षा जीवन का सबसे बड़ा और स्थायी धन है।

कामधेनुगुणा विद्या ह्यकाले फलदायिनी |
प्रवासे मातृसदृशा विद्या गुप्तं धनं स्मृतम् || [4]

आज व्यक्ति की पहचान उसके ज्ञान और योग्यता से होती है, न कि केवल धन या पद से| अच्छी शिक्षा और कौशल ही आज नौकरी और उन्नति के अवसर प्रदान करते हैं।शिक्षित और योग्य व्यक्ति को देश-विदेश हर जगह सम्मान मिलता है। विद्या व्यक्ति को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाती है।आज का युग विज्ञान और तकनीक का है, जहाँ निरंतर सीखना आवश्यक है।

केवल किताबों में लिखी हुई, लेकिन व्यवहार में न लाई गई विद्या **निरर्थक** है। उसी प्रकार, जो धन आपके पास न होकर किसी और के पास है, वह जरूरत के समय **आपके लिए बेकार** है। इसी भाव को व्यक्त करते हुए चाणक्य लिखते हैं -

पुस्तकेषु च या विद्या परहस्तगतं धनम् |
उत्पन्नेषु च कार्येषु न सा विद्या न तद् धनम् || [5]

आज के समय में बहुत लोग डिग्री तो ले लेते हैं, लेकिन व्यावहारिक कौशल (practical skills) नहीं सीखते। यदि ज्ञान केवल किताबों तक सीमित है, तो नौकरी, व्यवसाय या जीवन की समस्याओं में वह सहायक नहीं होगा। जब तक ज्ञान को समझकर जीवन में लागू न किया जाए, वह व्यर्थ है। यदि आपकी कमाई या संपत्ति पूरी तरह दूसरों पर निर्भर है, तो आप सुरक्षित नहीं हैं। डिजिटल युग में वित्तीय साक्षरता (financial literacy) अत्यंत आवश्यक है।

विद्या और सुख साथ-साथ नहीं मिलते। विद्यार्थी को अस्थायी सुखों का त्याग कर कठिन परिश्रम करना चाहिए। निम्न श्लोक में चाणक्य इसी भाव को व्यक्त कर रहे हैं -

सुखार्थी चेत् त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम् |
सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतो सुखम् || [6]

आज की प्रतियोगी परीक्षाओं, करियर निर्माण और कौशल विकास के दौर में विद्यार्थियों को मनोरंजन, सोशल मीडिया और अन्य सुख-सुविधाओं से दूरी बनाकर पढ़ाई पर ध्यान देना पड़ता है। आज के डिजिटल युग में आत्म-नियंत्रण और समय प्रबंधन पहले से अधिक आवश्यक हैं।

विद्यार्थी जीवन तपस्या के समान है। हर विद्यार्थी को आत्मा संयम और सद्गुणों को अपनाने की सन्देश देते हुए कहते हैं कि -

कामक्रोधौ तथा लोभं स्वादु श्रृंगार कौतुके |
अतिनिद्रातिसेवे च विद्यार्थी ह्यष्ट वर्जयेत || [7]

आज सोशल मीडिया, गेम्स और मनोरंजन विद्यार्थियों का ध्यान भटकाते हैं। यह श्लोक संयम और समय-प्रबंधन की सीख देता है।अतिनिद्रा और असंयमित जीवनशैली से शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है। काम, क्रोध और लोभ से दूर रहकर ही विद्यार्थी एक अच्छे नागरिक और सफल व्यक्ति बन सकता है।

निम्न श्लोक में चाणक्य ने मानव जीवन में नैतिक गुणों और सच्चे आचरण की महत्ता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

लोभश्रेदगुणेन किं पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः
सत्यं चेत्तपसा च किं, शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् |
सौजन्यं यदि किं गुणैः, सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः
सद् विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना || [8]

आज धन और बाहरी दिखावे को अधिक महत्व दिया जाता है, जबकि यह श्लोक सिखाता है कि सच्चा मूल्य चरित्र और विद्या का है। राजनीति, व्यवसाय और व्यक्तिगत जीवन में ईमानदारी और शुद्ध आचरण की आवश्यकता पहले से अधिक है। आज सोशल मीडिया और सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठा (इमेज) बहुत महत्वपूर्ण है; अपयश व्यक्ति को सामाजिक रूप से तोड़ सकता है। कवि का मुख्य संदेश है कि **मनुष्य का वास्तविक आभूषण उसके नैतिक गुण और विद्या हैं, न कि धन या बाहरी सजावट।** यह शिक्षा आज भी उतनी ही सार्थक है, क्योंकि समाज की वास्तविक उन्नति अच्छे चरित्र और सत्यनिष्ठा से ही संभव है।

व्यक्ति में स्वयं समझने और विचार करने की क्षमता नहीं है, तो बाहरी साधन या पुस्तकें भी उसके लिए व्यर्थ हैं। निम्न श्लोक में चाणक्य ने ज्ञान और बुद्धि के महत्व को स्पष्ट किया है।

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शस्त्रं तस्य करोति किम् |
लोचनाभ्यां विहीनस्य यस्य दर्पणः किं करिष्यति || [9]

आज इंटरनेट और पुस्तकों में अपार जानकारी उपलब्ध है, परंतु विवेक और सही निर्णय लेने की क्षमता आवश्यक है। बिना विवेक के व्यक्ति गलत सूचनाओं का शिकार हो सकता है। आत्मनिर्भर और सफल बनने के लिए स्वविवेक और तार्किक सोच अत्यंत आवश्यक है।

अंततः कहा जा सकता है कि **चाणक्यनीति** की शिक्षाएँ केवल प्राचीन समय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि 21वीं शताब्दी में भी शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत प्रासंगिक हैं। आज जब शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम बनती जा रही है, तब चाणक्य की नीतियाँ हमें चरित्र-निर्माण, अनुशासन, आत्मसंयम और व्यावहारिक ज्ञान का महत्व समझाती हैं।

डिजिटल युग में अपार जानकारी उपलब्ध है, परंतु विवेक, नैतिकता और सही निर्णय लेने की क्षमता ही सच्ची शिक्षा का आधार है। चाणक्य ने विद्यार्थी जीवन में परिश्रम, समय-प्रबंधन, गुरु-आदर और आत्मनियंत्रण को आवश्यक बताया, जो आज भी सफलता की कुंजी हैं।

इस प्रकार, 21वीं सदी की प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी दुनिया में भी चाणक्यनीति शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व-विकास और राष्ट्र-निर्माण का सशक्त साधन बनाने की प्रेरणा देती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

डॉ रामचंद्र वर्मा शास्त्री , सम्पूर्ण चाणक्य नीति - दशम अध्याय, श्लोक-1, पृ. संख्या -149, युविका पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली -2012 .

डॉ रामचंद्र वर्मा शास्त्री , सम्पूर्ण चाणक्य नीति - तृतीय अध्याय, श्लोक-8, पृ. संख्या -61, युविका पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली -2012.

डॉ रामचंद्र वर्मा शास्त्री , सम्पूर्ण चाणक्य नीति - अष्टम अध्याय, श्लोक-20, पृ. संख्या -137, युविका पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली -2012.

डॉ रामचंद्र वर्मा शास्त्री , सम्पूर्ण चाणक्य नीति - चतुर्थ अध्याय, श्लोक-5, पृ. संख्या -73, युविका पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली -2012.

डॉ रामचंद्र वर्मा शास्त्री , सम्पूर्ण चाणक्य नीति - षोडश अध्याय, श्लोक-20, पृ. संख्या -218, युविका पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली -2012.

डॉ रामचंद्र वर्मा शास्त्री , सम्पूर्ण चाणक्य नीति - दशम अध्याय, श्लोक-3, पृ. संख्या -150, युविका पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली -2012.

डॉ रामचंद्र वर्मा शास्त्री , सम्पूर्ण चाणक्य नीति - एकादश अध्याय, श्लोक-10, पृ. संख्या -163, युविकापब्लिशिंगहाउस,दिल्ली-2012.

डॉ रामचंद्र वर्मा शास्त्री , सम्पूर्ण चाणक्य नीति - सप्तदश अध्याय, श्लोक-4, पृ. संख्या -220,

युविका पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली -2012.
डॉ रामचंद्र वर्मा शास्त्री , सम्पूर्ण चाणक्य नीति - दशम अध्याय, श्लोक-9, पृ. संख्या -153, युविका पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली -2012.